UNIT - II

क)आई. ए. रिचर्ड का सिद्धांत और व्यावहारिक आलोचना

2.0 रिचर्ड्स का जीवन परिचय :

आई.ए. रिचर्ड्स (IVory Armstrong Richards) 1839-1979 :

रिचर्डस का जन्म 26 जनवरी 1839 ई में हुआ तथा मृत्यु 7 सितम्बर 1979 ई. में हुई । वे जीवन भर आलोचना -शास्त्र को व्यवस्थित रूप देने में प्रयासरत रहे । इनकी शिक्षा क्लिक्टन और कैम्ब्रिज में हुई थी । इन्हें कैम्ब्रिज और पेकिंग(चीन) के विश्वविद्यालय में नियुक्ति मिली थी । कुछ समय कार्य करने के उपरांत ये 1944 से 1963 तक हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विषय के प्रोफेसर रहे । इनके केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्यापन का बड़ा प्रभाव पड़ा । इनके अध्यापन में मनोविज्ञान एवं अर्थविज्ञान का विशेष योगदान था । इन्होंने यद्यपि अनेक ग्रंथ लिखे, पर उनमें से प्रमुख हैं -

प्रिंसिपल्स ऑफ लिटरेरी क्रिटिसिज्म (1924), प्रैक्टिकल क्रिटिसिज्म (1929), फिलासफी ऑफ रिटोरिक (1936), हाउ टु रीड ए पेज (1942), सांईस एण्ड पोएट्री आदि

2.1 रिचर्ड्स का सिद्धान्त

आधुनिक समीक्षा एवं साहित्य -चिंतन के क्षेत्र में रिचर्ड्स का महत्त्वपूर्ण स्थान है, वे मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में कविता और कला की सार्थकता और महत्व पर अपने विचार प्रकट किये हैं । वे मौलिक विचारक माने जाते हैं । उन्होंने डॉ. ब्रैडले के कला, कला के लिए ' सिद्धांत का खंडन किया और अपने मूल्य-सिद्धांत की स्थापना की है ।

उनका मत है कि आज जब प्राचीन परंपरायें टूट रही हैं और मूल्य विघटित हो रहे हैं, तब सभ्य समाज कला और काव्य के सहारे ही अपनी मानसिक व्यवस्था और संतुलन बनाये रख सकता है । रिचर्ड्स के विचार से साहित्यालोचना का सिद्धांत दो स्तंभों पर टिका होना चाहिए । एक मूल्यों का लेखा-जोखा और दूसरा संप्रेषणीयता का आकलन । इसका यह अर्थ हुआ कि

Scanned with CamScanner

कविता और कला में मूल्य और संप्रेषणीयता के गुण होने चाहिए। इन्हीं दो गुणों के आधार पर रिचर्ड्स ने मूल्य सिद्धांत और संप्रेषणीयता के सिद्धांत की स्थापना की। उनका विचार है कि यह एक गंभीर त्रुटि है कि सौन्दर्यशास्त्र के प्रसंग में मूल्य -संबंध विचार की अपेक्षा की जाती है। यह एक अलग बात है कि उसका केवल मूल्य की दृष्टि से विचार किया जाय, उससे तो बड़ा अनर्थ हो सकता है। परंतु वह तथ्य भी अप्रासंगिक नहीं है कि कला संबंधी कुछ अनुभव सचमुच मूल्यवान होते हैं। आधुनिक सौन्दर्य शास्त्र यह मानकर चलता है कि जिसे हम सौन्दर्यानुभूति कहते हैं, वह एक मानसिक क्रिया है। इससे सौन्दर्यानुभूति अवस्था की हवाई समस्या उत्पन्न होती है जो सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की अरूप खोज की पुरानी परंपरा कही जा सकती है। वास्तविकता यह है कि सभी प्रकार के अनुभव कला-मूल्यों के साथ जुड़े रहते हैं। सौन्दर्य के गुण, अनेक कारणों से उद्भूत होते हैं। सौन्दर्यानुभूति विशिष्ट और विलक्षण होती है, यह विशिष्ट अनुभूति अन्य अनुभूतियों से भिन्न होती है, यह मानते हुए भी यह देखा जाता है कि सौन्दर्य का अनुभव, मूल्य के साथ भी जुड़ा है।

रिचर्ड्स के विचार से मन में संवेगों(Impulses) का उतार-चढ़ाव होता रहता है, जिससे उसमें तनाव या विषमता उत्पन्न होती रहती है। काव्य और कला इन संवेगों में संगति और संतुलन स्थापित करती है। वे संवेगों को व्यवस्थित कर स्नायु -व्यवस्था को सुख पहुँचाती है। सौन्दर्य इसलिए मूल्यवान है, क्योंकि वह विरोधी संवेगों से उत्पन्न विषमता में व्यवस्था और संतुलन स्थापित करता है।

इन संवेगों की दो कोटियाँ हैं - एक काम्य और दूसरी अकाम्य या विरक्ति। प्रथम प्रकृतिमूलक है और द्वितीय निवृत्ति या विरक्तिमूलक। रिचर्ड्स के विचार से वे एषणायें (काम्य संवेग) अधिक महत्वपूर्ण है जो दूसरी एषणाओं को अवरुद्ध या नष्ट किये बिना अपना विकास करती हैं। मन की सबसे अधिक उत्तम स्थिति वह है जिसमें मानसिक क्रियाओं की सर्वोत्कृष्ट संगति स्थापित कम-से-कम होती है। कला और काव्य इस स्थिति के संपादन में सहायक होते हैं, क्योंकि वे -

1) संवेगों में संतुलन स्थापित करते हैं और तनाव को दूर करते हैं।

2) वे हमारी अनुभूति और संवेदनाओं को व्यापक बनाते हैं। यह संतुलन की स्थिति बाह्य क्रियाओं को भी प्रेरणा देती है।

रिचर्ड्स के विचार से काव्य या कला अपने में सीमित या एकांतिक नहीं होती। वे अन्य मानव-व्यापारों से संबद्ध होती है, उनसे पृथक या भिन्न नहीं। मनुष्य की जितनी भी क्रियायें और कार्य हैं उनमें कला-सर्जना सबसे अधिक मूल्यवान है। किसी भी मानव-कार्य का मूल्य इस बात पर निर्धारित किया जाता है कि वह कहाँ तक संवेगों के संतुलन और सुव्यवस्था उत्पन्न करने में सक्षम

Scanned with CamScanner

है । यही रिचर्ड्स का मूल्य-सिद्धांत है । विज्ञान और साहित्य का भेद बताते हुए रिचर्ड्स ने कहा है कि प्रत्येक कथन में वस्तुओं का निर्देश किया जाता है । जब निर्दिष्ट वस्तुएँ सच्ची और वास्तविक होती है । और उनके बीच संबंध भी सच्चा होता है, तब वह कथन वैज्ञानिक होता है । इसके विपरीत जब कथन में निर्दिष्ट वस्तुओं का सच्चा होना महत्वपूर्ण न हो और उनके बीच निर्दिष्ट संबंध भी महत्वपूर्ण न हो, वरन इसके स्थान पर यह महत्वपूर्ण हो कि उनसे हमारे भाव और मनोवेग कहाँ तक जाग्रत होते हैं ; तो ऐसे कथन वैज्ञानिक न होकर साहित्यिक या कलात्मक होते हैं । कविता का संबंध बौद्धिक सत्य से न होकर रागात्मक संबंध से होना है । कविता का पाठक या श्रोता उन सभी कथनों को स्वीकार करता है जो रागात्मक स्तर पर है और भाव-दृष्टि से सही है - तथ्यात्मक दृष्टि से वे चाहे गलत ही क्यों न हो ।

रिचर्ड्स की दृष्टि से हमारे अनुभवों के दो स्रोत हैं - प्रथम बाह्य जगत्, दूसरी मानसिक अवस्थायें । विज्ञान का संबंध प्राय: बाह्य जगत् से होता है और साहित्य का मूलत: अंत:करण या मानसिक अवस्थाओं से । साहित्य का मूल्य इस बात से नहीं कि वह कितना बौद्धिक ज्ञान प्रदान करता है, वरन् इस बात से आँका जाता है कि उसमें भावों और संवेगों को जाग्रत करने और उनमें संतुलन स्थापित करने की कितनी क्षमता है ।

कला और कविता हमारी अनुभूतियों और संवेदनाओं को व्यापक बनाती हैं और इस प्रकार मानव-मानव के बीच संवेदनात्मक एकत्व स्थापित करती हैं । भारतीय दृष्टिकोण से इसे अनुभव का साधारणीकरण कह सकते हैं । रिचर्ड्स के अनुसार इस प्रकार का संतुलन और समन्वय ही कला के गुण हैं । यही उसका मूल्य है । यह कार्य, कला, सौन्दर्य के माध्यम से करती हैं ; क्योंकि वह उसी की अभिव्यक्ति है । सौन्दर्य जिससे उद्वेलित मन में शांति आ जाती है । इस संतुलन के कार्य को रिचर्ड्स ने सिंथेसिस कहा है । उनका विचार है कि सिनस्थीसिस ताजगी देती है, थकान नहीं ।

रिचर्ड्स का मुख्य सिद्धांत संप्रेषणीयता का है । वे संप्रेक्षण को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं । उनके विचार से संप्रेषण कला का तात्विक धर्म है । मानव सामाजिक प्राणी होने के कारण, बचपन से ही वह अपने अनुभवों का संप्रेषण करता चलता है । वह जो कुछ करता है दूसरों तक पहुँचना चाहता है । अत: किसी कलाकृति की उत्तमता की यही कसौटी है कि उसमें कलाकार जो कुछ कहना चाहता है वह दूसरों तक भलिभाँति पहुँचा सका या नहीं । इन्हीं संप्रेषणों के द्वारा ही मनुष्य को अपने परिवार और समाज से विचार, ज्ञान और अनुभूति प्राप्त होते रहते हैं । इसी संप्रेषण-शक्ति के कारण एवं इसीके माध्यम से मानव -समाज का सांस्कृतिक वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास हुआ है और होता जा रहा है । मस्तिष्क के विशिष्ट गुणों का बहुत बड़ा अंश इसके संप्रेषण माध्यम का यंत्र है । पर इस संप्रेषण क्रिया का सर्वाधिक उपयोग कला-कर्म में होता है । वास्तव में कलाएँ

Scanned with CamScanner

संप्रेषण क्रियाओं के उत्कृष्ट चरण रस है । उसके संप्रेषण माध्यम का यंत्र है । पर इस संप्रेषण क्रिया का सर्वाधिक उपयोग कला-कर्म में होता है । इस संप्रेषण के तीन आधार हैं -

1. लय और छंद
2. शब्दावली और
3. बिम्ब-सृष्टि ।

संप्रेषणीयता किसी कलाकृति में प्रभावकारी तभी होती है जब कवि या कलाकार की अनुभूति व्यापक विस्तृत एवं मूल्यवान हो तथा अनुभूति के क्षणों में संवेगों की व्यवस्थित संघटना हो । साथ ही वस्तु या स्थिति के पूर्ण बोध के लिए कवि या कलाकार में जागरुक निरीक्षण शक्ति हो और उसके अनुभवों और सामाजिक के अनुभवों में सामंजस्य हो । जहाँ अंतर का अनुभव हो वहाँ कल्पना की सहायता से संप्रेषणीय बनाया जाय ।

रिचर्ड्स ने कल्पना के कार्यों पर भी सूक्ष्मता से विचार किया है । उनके विचार से यह कोई रहस्यमय शक्ति नहीं, वरन मन की अन्य क्रियाओं के समान ही होती है । कल्पना छः विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होती है, जो हैं -

1. विश्व चक्षु बिम्बों की उत्पादन -शक्ति के रूप में
2. आलंकारिक भाषा के प्रयोग करने में ।
3. दूसरों की मन:स्थिति को पुन: प्रकट करने में ।
4. असंबद्ध तत्वों को एक साथ प्रस्तुत करने की सूझ के रूप में ।
5. अदृश्य तत्वों और निराकार वस्तुओं को प्रस्तुत करने में तथा
6. विपरीत या विरोधी गुणों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में ।

कल्पना पुरानी और ज्ञात बातों के प्रस्तुतीकरण में भी ताजगी और नव्यता ला देती है ।

Scanned with CamScanner